श्री श्रेयांसनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री श्रेयांसनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री श्रेयांसनाथ विधान

जय बोलिये

हित के उपदेष्टा,
परमात्मा के सृष्टा,
आत्मसुख के अभिलाषी,
परमात्म गुण के विकासी,
वैराग्यमयी संन्यासी,
जिनसम्पत्ति के वासी,
श्रेयस-निःश्रेयस भगवान्,
परमपूज्य
श्री श्रेयांसनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(दोहा)

जो भी प्रभु श्रेयांस के, गुणगाने बेचैन।
भजन भक्ति से भक्त के, खुलते अन्तर नैन॥

(लय : गुरु तू न मिला...)

हमें कुछ ना मिला, कितनी गतियाँ तो यूँ ही गुजारी।
किसी से ना गिला, गायें कैसे हम महिमा तुम्हारी॥
पर भव में हमने ये वादा किया।
आगे सुधारेंगे अपना जिया॥
कुछ भी ना किया[3], कैसे पूरी हो इच्छा हमारी॥
किसी से ना गिला.....॥ 1॥
हँसते आये थे हम रोते जायेंगे हम।
बाँधे केवल करम, काटें कैसे करम॥
खेद कुछ ना किया[3], कैसे खुशियों की पायें बहारी॥
किसी से ना गिला.....॥ 2॥
खाली झोली रही पूरी भर न सके।
लाखों अरमान थे पूरे कर न सके॥
आश्रय ना मिला[3], भटके दर-दर बने हम भिखारी॥
किसी से ना गिला.....॥ 3॥
जैसा छोड़ा सभी ने ना छोड़ोगे तुम।
साथ दोगे सदा मुख ना मोड़ोगे तुम॥
ऐसी हो कृपा[3], 'सुव्रत' मुक्ति की पायें सवारी॥
किसी से ना गिला.....॥ 4॥

श्री श्रेयांसनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

ग्यारहवे तीर्थेश हैं, श्रेयांसनाथ भगवान्।
पूजन के पहले जिन्हें, नमोस्तु हो धर ध्यान॥

(मात्रिक सवैया)

प्रभु श्रेयांसनाथ जिनवर जी, मोक्षमहल शुद्धातम धाम।
विघ्न कष्ट बाधाएँ सारी, टिकें न सुनकर जिन का नाम॥
पूजन ध्यान जाप से जीवन, मंगलमय होते हर काम।
जिनके पथ पर चलकर आतम, भव भोगों को करे विराम॥

वैसे तो ऐसे जिनवर की, समा न सकती जग में शान।
किन्तु भक्त ने भक्ति महल में, जिन्हें पुकारा कर सम्मान॥
प्रेम द्वार से आओ! आओ!, करो चिदातम चित्-कल्याण।
चरणों में हैं भक्त समर्पित, और समर्पित तन मन प्राण॥

(दोहा)

निष्ठा से करते नमन, हाथ जोड़ नत माथ।
हृदय कमल पर आइए, हे प्रभु श्रेयांसनाथ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

(लय : पाँचों मेरु असी....)

श्रद्धा-जल की देकर धार,मिले मुक्ति का आतम द्वार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

चंदन से करते सत्कार, आत्म शांति होवे उद्धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

पुंज चढ़े हो हर्ष अपार, आत्म व्याधियाँ हों परिहार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

पुष्पों सम निज खिले बहार, कामदेव का हो संहार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

जिन सम निज का हो आहार,क्षुधारोग का तब प्रतिकार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

करें आरती दीप उजार, जड़ से आत्म हरें अँधयार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

धूप गंध ले बहे वयार, जा पहुँचे मुक्ति के द्वार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

पूजें फल लेकर रसदार, सहकर नाशें कर्म प्रहार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

आठों द्रव्य चढ़े मनहार, जिनसे आतम का त्यौहार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

षष्ठी कृष्णा ज्येष्ठ को, तज सोलहवाँ स्वर्ग।
आये प्रभु श्रेयांस जी, माँ नंदा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रंथ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुन-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गये श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

जिनके आश्रय से हुए, भक्तों के कल्याण।
ऐसे प्रभु श्रेयांस का, नमन सहित गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके सारे आश्रय छूटे, सहायता भी मिले नहीं।
सुख-दुख में ना साथ मिले तो, हृदय कली भी खिले नहीं॥
महा निराशा जिनको घेरे, मेघ उदासी के छायें।
जिन्हें आश की किरण न दिखती, हो बेचैन व्यथा पायें॥ 1॥

ऐसे में श्रेयांसनाथ की, अगर झलक भी मिल जाती।
तो प्रतिकूल अवस्थाएँ सब, झट अनुकूल बनीं जातीं॥
परम पूज्य श्रेयांसनाथ के, आश्रय के अभिलाषी जो।
भक्ति करें गुणगान करें वो, नमन करें संन्यासी को॥ 2॥

एक नलिनप्रभ राजा था जो, ऋद्धि सिद्धि मय धर्मात्मा।
जिनवर का सान्निध्य प्राप्तकर, बना संत उसका आत्मा॥
फिर तीर्थंकर प्रकृति बाँधकर, मृत्यु महोत्सव किया अहा।
सोलहवें सुर के पुष्पोत्तर, विमान में जा इन्द्र हुआ॥ 3॥

भोग-भोगकर नगर सिंहपुर, विष्णु नन्दा पुत्र हुए।
तीन ज्ञान के धारी प्रभु के, जन्म समय आश्चर्य हुए॥
रोग शोक भय कष्ट मिटे सब, पापी जीव बने धर्मी।
पुष्प वृष्टि हो देव नृत्य हों, संतोषी हों षट्-कर्मी॥ 4॥

देवों ने जन्मोत्सव करके, पूज्य नाम श्रेयांस रखा।
तन के अवयव ऐसे बढ़ते, ज्यों चंदा हो बाल सखा॥

राज भोगकर इक दिन देखा, बसन्त ऋतु का परिवर्तन।
भव भोगों से विरक्त होकर, श्रेयस्कर को सौंपा धन॥ 5॥

चले मनोहर वन तो शिविका, विमलप्रभा पर हुए सवार।
इक हजार राजाओं के सह, तप धारा हुई जय-जयकार॥
ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, दिए नन्द राजा आहार।
पञ्च-पञ्च आश्चर्य हुए तो, प्रथमदान मंगल उपहार॥ 6॥

दो वर्षी छद्मस्थ बिताये, फिर दीक्षा वन को पहुँचे।
बेला करके बने केवली, देव पर्व को आ पहुँचे॥
समवसरण फिर लगा जहाँ थे, सतहत्तर गणधर धारी।
कुल चौरासी हजार मुनि थे, बीस लाख आर्या न्यारी॥ 7॥

सुरनर से उस भरी सभा को, ज्ञान दिया फिर वह छोड़े।
फिर सम्मेदशिखर पर मासिक, ध्यान किया बंधन तोड़े॥
संकुल कूट हुआ पावन तब, प्रभु श्रेयांस मोक्ष पाये।
उसी तीर्थ में त्रिपृष्ठ नामक पहले नारायण आये॥ 8॥

अश्वग्रीव प्रतिनारायण भी, हुए विजय बलभद्र तभी।
इस प्रकार श्रेयांसनाथ को, भूल सके ना जगत् कभी॥
जिनके ज्ञान ध्यान यश वैभव, सब सीमाएँ लाँघ रहे।
फिर भी भगत उन्हें गुरु ग्रह के, परिहारों से बाँध रहे॥ 9॥

जिनके जन्म समय से अब तक, धर्म ध्वजा की हुई विजय।
''श्रेयांसि बहु विघ्नानि'' भी, सुन श्रेयांस नाम से क्षय॥
देख चराचर जग को भी जो, निज स्वरूप का स्वाद चखे।
जिनकी चरण धूल सिर धरकर, झट करले कल्याण सखे॥ 10॥

हम तो कब से शरण आपकी, अब तक ध्यान दिया क्यों ना।
माथा कब से झुका आपको, जिस पर हाथ रखा क्यों ना॥

यद्यपि आप विरागी हो प्रभु, राग मोह फिर खुद से क्यों?
आप पूर्ण हम अंश आपके, फिर मुख मोड़ा हमसे क्यों?॥ 11॥

द्रव्य भाव नोकर्म आपने, जैसे खुद के नशा दिए।
चिन्ता चिता नगर से न्यारा, नगर चेतना वसा लिए॥
उस चैतन्य धाम की हमको, शीघ्र छाँव दे दो स्वामी।
'सुव्रत' यह अर्जी लेकर के, चरणों में हैं प्रणमामि॥ 12॥

(सोरठा)

गेंड़ा जिनका चिह्न, श्रेयांसनाथ प्रभु नाम है।
हम पर रहो प्रसन्न, प्रभु को सदा प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

श्रेयांसनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, प्रभु श्रेयांस जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(पुरुषार्थ वर्णन)

(चौपाई)

प्रथम धर्म पुरुषार्थ कहा है, सब का जो आधार रहा है।
सब कुछ कर लो धर्म न भूलो, तो झट अपनी मंजिल छू लो॥

(दोहा)

चलो भाग्य पुरुषार्थ से, धर्म चक्र के धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 1॥

ॐ ह्रीं धर्मपुरुषार्थविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सब पूछेंगे आप हो कैसे, जब तक आपके जेब में पैसे।
धार्मिक अर्थ न व्यर्थ गंवाओ, सात क्षेत्र में दान लगाओ॥

चलो भाग्य पुरुषार्थ से, चक्र रत्न के धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 2॥

ॐ ह्रीं अर्थपुरुषार्थविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आगम विधि से व्याह रचाना, सीमित काम विषय कर पाना।
दो उत्तम संतान धर्म को, शेष रही वह निजी कर्म को॥
भाग्य और पुरुषार्थ से, पुत्र रत्न के धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 3॥

ॐ ह्रीं कामपुरुषार्थविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रेष्ठ मोक्ष पुरुषार्थ विश्व में, जल्दी हो वह हमें भविष्य में।
भाग्य भरोसे मोक्ष न पाओ, सुख से रहो न लौट के आओ॥
चलो भाग्य पुरुषार्थ से, मोक्ष महल के धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 4॥

ॐ ह्रीं मोक्षपुरुषार्थविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(दस प्राण वर्णन)

प्रथम इन्द्रिय स्पर्शन द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
आठ तरह का अनुभव करना, वह स्पर्शन दुख का झरना॥
स्पर्शन के प्राण मिटें, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 5॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनइन्द्रियसम्बन्धिविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दूजी इन्द्रिय रसना द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
षट्रस, छन्दों के रस ले के, रसना प्राण बड़े दुख देते॥
नाशें रसना प्राण को, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 6॥

ॐ ह्रीं रसनाइन्द्रियसम्बन्धिविकारविनाशन समर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

घ्राण तीसरी इन्द्रिय द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
जो दुर्गन्ध सुगन्ध स्वरूपी, घ्राण प्राण, है भव दुखकूपी॥

घ्राण प्राण का दुख हरें, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 7॥

ॐ ह्रीं घ्राणइन्द्रियसम्बन्धिविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चक्षु चौथी इन्द्रिय द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
पाँच वर्ण जो दुख के दाता, चक्षु प्राण भव रोग बढ़ाता॥
चक्षु प्राण का त्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 8॥

ॐ ह्रीं चक्षुइन्द्रियसम्बन्धिविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कर्ण पाँचवी इन्द्रिय द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
सात स्वरों से हुए कष्ट जो, हमें करें नित धर्म भ्रष्ट वो॥
कर्ण प्राण काँटे हरें, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 9॥

ॐ ह्रीं कर्णइन्द्रियसम्बन्धिविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पुण्य योग से जो मन पाया, स्वर्ग नर्क की दे वह माया।
यदि उससे सद् ध्यान लगाया, कर्म हरे, दे मुक्ति छाया॥
वीर्यरूप मन प्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 10॥

ॐ ह्रीं मनोबलविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वीर्य तथा स्वर नाम कर्म से, शक्ति वचन बल मिले धर्म से।
उससे कलह विरह भी होती, या कर लो रोशन निज ज्योति॥
वीर्यरूप वच प्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 11॥

ॐ ह्रीं वचनबलविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वीर्य तथा तन कर्मोदय से, शक्ति विशेष मिले प्रभु जय से।
तहस-नहस त्रय जग भी उससे, त्याग तपस्या भी हो जिससे॥
कायरूप बल प्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 12॥

ॐ ह्रीं कायबलविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्वास वायु लेना या तजना, यह है हर प्राणी का गहना।
इस बिन कैसे जीवन चलता, अगर सधे तो मिले सफलता॥
श्वासोच्छ्वासी प्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 13॥

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वाससम्बन्धिविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आयु कर्म से नर नारकादि, पर्यायों की मिले उपाधि।
इस बिन ना संसार चलेगा, पूर्ण नष्ट कर मोक्ष मिलेगा॥
आयु प्राण कब हर सकें, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 14॥

ॐ ह्रीं आयुसम्बन्धिविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(दसधर्म वर्णन)

क्रोध जलाये चेतन कलियाँ, नहीं मोक्ष की मिलती गलियाँ।
क्रोध महाभारत की भाषा, समता रामायण की आशा॥
क्रोध तजें धारें क्षमा, मुक्ति सखी का धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 15॥

ॐ ह्रीं क्रोधकषायविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मान महा विष जैसे होते, इससे प्राणी भव-भव रोते।
विनय समर्पण सुख के सेतु, बनो सुकोमल निज-रस हेतु॥
मान तजे धारें विनय, पंचम गति का धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 16॥

ॐ ह्रीं मानकषायविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मायाचारी है दुखकारी, दुनियाँ दुश्मन बने कटारी।
बिना सरलता कुछ ना मिलता, सरल पंथ है मोक्षमहल का॥
कपट तजें होवें सरल, यात्रा करें विराम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 17॥

ॐ ह्रीं मायाकषायविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

लोभ पाप का बाप कहाता, जो संतोष धर्म को खाता।
तृष्णा इसकी सखी सहेली, आतम को जो करती मैली॥
लोभ तजें शुचिता धरें, शुद्धातम का ध्यान।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 18॥

ॐ ह्रीं लोभकषायविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जूठ-झूठ द्वय राह पतन की, ये दुर्गति करते चेतन की।
अतः झूठ पर पर्दे पड़ते, सत्य दिगम्बर जैसे रहते॥
झूठ तजें फिर सत्य धर, पायें शाश्वत धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 19॥

ॐ ह्रीं असत्यविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जल जैसा मन नीचे जाता, संयम से ऊपर को आता।
षट् कायों की रक्षा करना, संयम नैया से भव तरना॥
पाप तजें संयम धरें, मिले शांति आराम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 20॥

ॐ ह्रीं असंयमविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तृष्णा आशा के दल-दल से, जीवन वंचित हो मंगल से।
तप बिन कहीं न मंगल होता, तप ही कर्म कालिमा धोता॥
भोग तजें तप से सजें, वीतराग विज्ञान।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 21॥

ॐ ह्रीं भोगोपभोगविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आतम को क्या लेना देना, किन्तु त्याग बिन काम बने ना।
त्याग दान आगम विधि करना, झरे चेतना का फिर झरना॥
परभावों का त्याग कर, निज रस मिले महान।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 22॥

ॐ ह्रीं कृपणताभावविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आतम बिन कुछ नहीं हमारा, आतम छोड़ झूठ व्यवहारा।
अतः परिग्रह पूरा छोड़ो, चिदानंद से नाता जोड़ो॥

संग त्याग निस्संग बन, पायें आतमराम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 23॥

ॐ ह्रीं कुमंत्रमूर्च्छाविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सभी योनियों सब गतियों में, दर-दर भटके दुर्गतियों में।
किन्तु ब्रह्म में रम ना पाये, ब्रह्मचर्य व्रत धर ना पाये॥
भ्रमण तजें निज में रमें, पायें शील मुकाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥ 24॥

ॐ ह्रीं अब्रह्मविकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

नाथ! आपका और हमारा, पता नहीं कैसा नाता।
जब तक तुम्हें न देखें पूजें, तब तक चैन नहीं आता॥
भक्त और भगवन् की दूरी, कैसे हम सह पायेंगे।
सचमुच आप बिना हम स्वामी, रो-रोकर मर जायेंगे॥
या तो दूरी पूर्ण मिटा दो, या फिर दूर चले जाओ।
या फिर हमको दूर भगा दो, किन्तु हमें ना तड़फाओ॥
आप दूर तो जा नहिं सकते, ना ही हमें भगा सकते।
अतः दूरियाँ कम करने को, 'सुव्रत' अर्घ्य चढ़ा हँसते॥
'जिन' से 'निज' की दूरियाँ, पाये पूर्ण विराम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अन्तरङ्गबहिरङ्ग एकतास्थापनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

टूटे फूटे भाग्य को, प्रभु देते हैं जोड़।
प्रभु भी उसका क्या करें, जो लेते मुख मोड़॥
मोड़ सकें हम मुख नहीं, कर पायें गठ जोड़।
अतः कहें जयमालिका, शीश मोड़ कर जोड़॥

(विद्योदय)

भाग्य भरोसे बैठे हो तो, फल क्या होगा?
सम्यक् ना पुरुषार्थ किया तो, कल क्या होगा?
प्यास लगी पर कुआँ नहीं तो, जल क्या होगा?
मिले न जल तो अपना अगला, पल क्या होगा?॥ 1॥

इन्हीं बिन्दुओं को अब तक तो, सुना नहीं क्यों?
सुनकर प्यारे-चेतन अब तक, गुना नहीं क्यों?
गुनकर सम्यक् ताना-बाना, बुना नहीं क्यों?
ताना-बाना बुनकर शिवपथ, चुना नहीं क्यों?॥ 2॥

इसीलिए तो दस प्राणों की, पीड़ा पाई।
तभी आयु बल पञ्चेन्द्री में, नींद न आई॥
व्यवहारी प्राणों के कारण, प्राण गँवाते।
निश्चय चेतन प्राण कभी हम, पा नहिं पाते॥ 3॥
''चारित्तं खलु धम्मो'' जो ''दस, लक्खण धम्मो''।
''वत्थु सहावो धम्मो'', ''धम्मो दया विसुद्धो''॥
ऐसा प्यारा धर्म कभी हम, पाल न पाये।
मात्र क्रोध में जले क्षमा को, धार न पाये॥ 4॥

मान किया, ना किया समर्पण, तभी दुखी हैं।
मायाचारी करने वाले, कहाँ सुखी हैं॥
अतः सरल बन शुचिता धारें, तजें लोभ को।
छोड़े झूठ, सत्य बोलें तो, कहाँ क्षोभ हो॥ 5॥

तजें असंयम पालें संयम, जगकल्याणी।
तप से आतम निर्मल होती, ये जिनवाणी॥
पर में तत्पर कभी न होकर, निज-रस पीवें।
ब्रह्मचर्य में रमण करें तो, सुख से जीवें॥ 6॥

ऐसा है उद्देश्य हमारा, मंगल-पावन।
जिसको पूरा करें आपके, करके दर्शन॥
दर्शन करके करें अर्चना, फिर जयमाला।
दो ऐसा आशीष खुले अब, मोक्ष का ताला॥ 7॥

'सुव्रत' कर पुरुषार्थ, मिटे प्राणों की पीड़ा।
निज स्वरूप में लीन रहें, पायें भव तीरा॥
अतः आपकी शरण ग्रहण कर, चरण पड़ें हम।
महामहोत्सव पण्डित-पण्डित, मरण करें हम॥ 8॥

(सोरठा)

अज्ञानी संसार, दुखिया सदा अनाथ हैं।
अतः किया सत्कार, चरणों में नत माथ हैं॥
चरणों की जयमाल, पढ़ें सुनें गायें लिखें।
होवे मालामाल, मोक्ष मार्ग में झट दिखें॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

श्रेयांसनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, प्रभु श्रेयांस जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री श्रेयांसनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

सिद्धक्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, श्रेयांसनाथ विधान॥
दो हजार तेरह दिसम्, मंगल त्रय तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

(इति शुभम् भूयात्)

आरती

(सखी)

अब दीप थाल भर लाये, सिर झुका करें प्रणमामि।
हम करें आरती तेरी, ओ! श्रेयांसनाथ जी स्वामी॥
हम करें आरती .....॥

तुम विष्णु नंदा के नंदा, हम भक्तों के आनंदा।
काटो भव दुख द्वंदा फंदा, प्रभु श्रेयांसनाथ जिनंदा॥
झट थामो अंगुली हमारी, हे! जिनवर अन्तर्यामी-
हम करें आरती .....॥ 1॥

हम द्वार आपके आके, अब करें आपकी पूजा।
जब तुमको अपना माना, तो रुचे न कोई दूजा॥
यों अपनाओ हमको ज्यों, अपनाई मुक्ति रानी-
हम करें आरती .....॥ 2॥

बाहर में ज्ञान की ज्योति, अंतर में ध्यान के मोती।
जिन-धन वह पाता जिस पर, सद्-कृपा आपकी होती॥
अब कृपा करो हम पर भी, हम बनें भेद विज्ञानी-
हम करें आरती .....॥ 3॥

ज्यों सूर्य कमल का रिश्ता, ज्यों माता शिशु की लोरी।
ज्यों सिंधु नदी की धारा, ज्यों बाल पतंग की डोरी॥
ज्यों दीप ज्योति की बाती, त्यों 'सुव्रत' के तुम स्वामी-
हम करें आरती .....॥ 4॥